विज्ञानकी परिभाषा

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५.

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक ३६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ५ नवम्बर, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

भारतकी भाषायें और बोलियां

[ता० २९–१०–'५५ के अंकके अनुसंधानमें]

२

शायद आप मुझसे अुस कामके संबंधमें कुछ बतानेकी आशा तो नहीं रखते होंगे, जिसमें राजभाषा-कमीशन आजकल लगा हुआ है। अगर अैसी आशा रखते हों तो आपको निराश होना पड़ेगा। आप अिस चीजको तो बेशक समझते होंगे कि अिस पेचीदा प्रश्न पर ब्यौरेवार विचार करते समय पैदा होनेवाले अनेक मुद्दोंमें से किसी भी मुद्दे पर कोअी विचार प्रकट करना मेरे लिअे अनुचित और असामयिक भी माना जायगा; आप अिसे भी समझेंगे कि अिस विषय पर आजकी अवस्थामें कमीशनको और अुसके अध्यक्षके नाते मुझे बिलकुल खुला दिमाग रखना चाहिये। लेकिन जब मैं देशके सारे हिस्सोंके भारतीय भाषाओंकी शोधमें लगे हुअे अैसे प्रसिद्ध विद्वानोंको अपने सामने देखता हूं तो मैं अपनी कठिनाअियां आपके सामने रखनेके अिस अवसरको हाथसे जाने नहीं दे सकता। अिससे आप हमारा मार्गदर्शन कर सकेंगे, जो कमीशनके सामने विचारके लिअे अुपस्थित समस्याको हल करनेमें कीमती साबित होगा।

शायद मैं कुछ शब्द अुस दृष्टिके बारेमें कहनेकी हिम्मत कर सकता हूं जिससे मेरी रायमें अिस प्रश्नको सामान्यतः देखना चाहिये। कमीशनके सामने जो कार्य है, वह सचमुच व्यावहारिक है। अुसे अिस बातका विचार करना है कि राजभाषा और अन्य भारतीय भाषाओंका क्या स्थान होना चाहिये, ताकि देशका व्यवहार अधिकसे अधिक सुविधासे चल सके, आन्तर-राज्य संबंधोंके सारे अुपयुक्त स्तरों पर परस्पर व्यवहारका अनुकूल साधन अुपलब्ध हो सके, और हमारी वर्तमान असंतोषप्रद स्थितिसे अैसी स्थितिमें — जिसमें राजभाषा और अन्य भारतीय भाषाओंने देशके जीवनमें अपने-अपने क्षेत्रोंमें अुपयुक्त स्थान ग्रहण कर लिया होगा — पहुंचनेके संक्रान्ति कालमें विश्वविद्यालयोंमें शिक्षणका स्तर (जिस पर हमारी वैज्ञानिक और टेकनिकल प्रगति बहुत ज्यादा निर्भर करती है) गिर न जाय।

अिस प्रश्नका अेक महत्त्वपूर्ण पहलू है, जिस पर मेरे विचारसे हमें ध्यान देना चाहिये। हमारे संविधानने राज्यकी नीतिके निर्देशात्मक सिद्धान्तोंमें राज्यके लिअे यह कर्तव्य निर्धारित कर दिया है कि संविधानके आरंभसे १० वर्षके भीतर वह देशके सारे बालकोंके लिअे, अुनके १४ वर्ष पूरे करने तक, मुफ्त और अनिवार्य शिक्षण देनेकी व्यवस्था करनेका प्रयत्न करे। यह तो स्पष्ट है कि नीतिके अिस निर्देशमें जिस देशव्यापी साक्षरता और प्राथमिक शिक्षणकी कल्पना की गअी है, वह केवल भारतीय भाषाओं द्वारा ही दिया जा सकता है न कि अंग्रेजी भाषा द्वारा, जो पिछले लगभग १०० सालके राज्याश्रयके बावजूद तथा विदेशी शासकों द्वारा देश पर लादी जानेके बावजूद विशाल जनसमुदायके अत्यन्त अल्प वर्गसे ज्यादा लोगोंमें नहीं फैल सकी है। भारतकी जनताने अपने-आपको प्रजातांत्रिक गणराज्यका संविधान अर्पण किया है, जो बालिग मताधिकार पर आधार रखता है। अिसलिअे हमें अपने देशके शिक्षण और सार्वजनिक जीवनके संपूर्ण प्रश्नको केन्द्रित विदेशी शासनके सन्दर्भसे बिलकुल भिन्न सन्दर्भमें देखना होगा, जिस शासनमें समाजके मुट्ठीभर लोगोंमें अंग्रेजीका ज्ञान देशकी सारी आवश्यकताओंके लिअे पर्याप्त समझा जाता था। मुझे लगता है कि यह सब हमारे समाजमें अंग्रेजीको अपने स्थानसे हटानेकी आवश्यकताको अनिवार्य बना देता है।

लेकिन जब मैं यह कहता हूं कि अंग्रेजी भाषाको अन्तमें हमारे देशके राष्ट्रीय जीवनमें अुसने जो स्थान आज प्राप्त कर लिया है अुससे हटाना होगा, तो आप यह खयाल न करें कि मैं आन्तर-राष्ट्रीय व्यवहारके अेक सबसे प्रमुख साधनके नाते अंग्रेजीके वर्तमान महत्त्वको भूल रहा हूं, या मैं अुसके साहित्यिक सौन्दर्य और वैज्ञानिक ज्ञान-भण्डारकी अुपेक्षा करता हूं, अथवा मैं यह बात भूल गया हूं कि अंग्रेजीने हमारे लिअे अेक राष्ट्रीय मंचका काम दिया है और हमारी राष्ट्रीय अेकताके निर्माणमें महत्त्वपूर्ण भाग लिया है। न मैं अिस प्रश्नको केवल देशभक्तिकी भावनासे ही देखता हूं। भाषाके संबंधमें बेशक राष्ट्रीय स्वाभिमानके विचारोंका बड़ा महत्त्व है, क्योंकि भाषा किसी प्रजाके संपूर्ण राष्ट्रीय जीवनको बहुत गहराअीसे छूती है। कोअी भाषा किसी खास राष्ट्रकी मिल्कियत नहीं है, जाहिर है कि जो भी अुसे बोल सकते हैं अुन सबकी वह भाषा है। किसी भाषाको हम अिसीलिअे नहीं छोड़ सकते कि वह विदेशी है। अिसके सिवाय, अिस बारेमें मुझे कोअी शंका नहीं कि हमें अपने प्राकृतिक विज्ञानों और मानव-विद्याओंके स्नातकोंको अंग्रेजी और/या दूसरी किसी अनुकूल विदेशी भाषा अथवा भाषाओं पर काफी अधिकार रखनेवाले बनाना चाहिये, ताकि वे भारतीय भाषाओंमें अभी तक अप्राप्य ज्ञानभण्डारकी 'कुंजी' का और दुनियामें निरन्तर हो रही शिल्पविज्ञान और वैज्ञानिक ज्ञानकी तेज प्रगतिके लिअे 'खिड़की' का काम दे सकें। हमें अिसका ध्यान रखना चाहिये कि हमारा शिक्षणका स्तर गिरे नहीं और हमारी जल्दबाजीका बुरा असर मानवसमाज और शासनतंत्रके नेताओंकी कार्यक्षम तालीम पर न पड़े। लेकिन किसी विदेशी भाषाका दूसरी भाषाके नाते अुपयोग करनेमें और शिक्षण तथा देशका प्रतिदिनका व्यवहार चलानेके लिअे अुसे अेक-मात्र या प्रमुख माध्यम बनानेमें जमीन-आसमानका फर्क है। बालिग मताधिकार, मुफ्त और अनिवार्य शिक्षण, सामाजिक न्याय और समान अवसरकी वृद्धि वगैराके जरिये हम अुचित समयमें जो भारत-व्यापी राष्ट्रीय अुत्थान और नवनिर्माण करनेके लिअे वचनबद्ध हैं,

www.vinoba.in

अुसे मेरी रायमें भारतीय भाषाओंके सिवाय अन्य किसी भाषा द्वारा करनेकी कल्पना नहीं की जा सकती।

व्यापक जन-जागृति और देशके करोड़ों लोगोंकी आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रताकी अिस दृष्टिका अेक दूसरा पहलू भी है, जिसकी हमें अुपेक्षा नहीं करनी चाहिये। यह तो स्पष्ट है कि हमें हिन्दी और अन्य प्रादेशिक भाषाओंको वैज्ञानिक, टेकनिकल या कानूनी क्षेत्रों जैसे विशिष्ट क्षेत्रोंसे संबंध रखनेवाले शब्दों और शब्द-प्रयोगोंसे समृद्ध बनाना चाहिये (जिनसे पिछले कुछ दशकोंमें ये भाषायें अैतिहासिक कारणोंसे दूर रही थीं), लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि ये जीवित भाषायें अपने बोलनेवाले करोड़ों लोगोंकी सेवा करनेके लिअे हैं। कोअी जीवित भाषा रोजकी बोलचालकी भाषामें, सामान्य व्यावहारिक जीवनकी दुनियामें और बाजारमें जिन्दी रहती है, न कि शब्दकोश रचनेवालोंके शब्दकोशोंमें। अपनी भाषाओंके विकासमें सहायता करते समय हमें यह बात भूलकर अुन्हें केवल अपनी विद्वत्ताके स्मारक नहीं बना डालना चाहिये। किसी साधारण मनुष्यको भाषाकी शुद्धिके सिद्धान्तोंमें कोअी दिलचस्पी नहीं होती, और शायद वह सही है। सारी जीवित भाषायें सामाजिक परिस्थितियोंकी प्रेरणाओं और नअी आवश्यकताओंके अनुकूल बननेका निरन्तर प्रयत्न करती रहती हैं और अुसके दौरानमें वे विदेशी शब्द और शब्द-प्रयोग अुदार भावसे ग्रहण करती हैं तथा अुन्हें पचा लेती हैं। मुझे कहीं पढ़ा याद आता है कि अंग्रेजी भाषाके लगभग आधे शब्द या तो अिस तरह दूसरी भाषाओंसे लिये गये हैं या अैसे लिये गये शब्दोंसे बने हुअे हैं। अिसलिअे जीवित भाषाओंके शुद्धीकरण या भाषा-विषयक विद्वत्ताकी पूर्वकल्पित विचारसरणीके चौखटेमें अुन्हें जबरन् बैठानेके व्यर्थ प्रयत्नको टालनेके लिअे हम क्या करेंगे? मेरे विचारसे प्रत्येक अैसा शब्द जिसे किसी भाषाने अच्छी तरह पचा लिया है अुस भाषाकी विजयका द्योतक है, न कि अुस पर हमला करनेवाला है। ऑक्सफर्ड अिंग्लिश डिक्शनरीसे पता चलता है कि कअी सौ, करीब अेक हजार, भारतीय शब्द शिष्ट अंग्रेजीमें ले लिये गये हैं। यह बात श्री जी० सुब्बारावने अपनी पुस्तक 'अिंडियन वर्ड्स अिन अिंग्लिश' में लिखी है। अिसलिअे जब हम पुरानी कमियां पूरी करनेका प्रयत्न करते हैं और अपनी भाषाओंको नये शब्दभण्डारसे समृद्ध बनाना चाहते हैं, तब क्या शब्दोंके जातीय स्रोत या पुनरुत्थानवादके सिद्धान्तोंका विचार छोड़कर हमें सादगी, निश्चितता, अुपयोगिता और ग्रहण करनेवाली भाषाकी प्रकृतिके अनुरूप बन जानेकी क्षमताका खयाल रखकर ही शब्दों और शब्दप्रयोगोंका चुनाव नहीं करना चाहिये? मेरे सामने बैठे हुअे अिस विषयके विद्वानोंकी रायसे अिस प्रश्न पर कमीशनको कीमती मार्गदर्शन मिल सकता है।

संविधानकी धारा ३५१ अिस बातको बिलकुल स्पष्ट कर देती है कि हिन्दी भाषाका, जो भारतीय संघकी राजभाषा है, अैसा विकास किया जाय कि वह भारतकी मिलीजुली संस्कृतिके सारे तत्त्वोंके लिअे अभिव्यक्तिका माध्यम बन सके, और अुसकी आत्माके साथ छेड़खानी किये बिना हिन्दुस्तानी और दूसरी भारतीय भाषाओंमें काममें लिये जानेवाले शैलियोंके रूपों, मुहावरों वगैराको लेकर तथा पचाकर अुसे समृद्ध बनाया जाय। संविधानने सारी भाषाओं और लिपियोंको काफी संरक्षण और गारण्टी भी दी है। अिसलिअे यह अेक अैसी समस्या है, जो पेचीदा होते हुअे भी बुद्धिकी मददसे हल की जानी चाहिये, न कि आवेश और अुत्तेजनाकी मददसे! भाषाकी समस्या व्यावहारिक नीतिकी समस्या है, जिस पर धार्मिक अथवा पुनर्जागरणकी दृष्टिसे भिन्न धर्मनिरपेक्ष दृष्टिसे, प्रान्तीय या साम्प्रदायिकसे भिन्न राष्ट्रीय दृष्टिसे और सैद्धान्तिकसे भिन्न व्यावहारिक दृष्टिसे विचार किया जाना चाहिये।

अिसके सिवाय, अेक और बात है, जो मुझे विवादसे परे मालूम होती है। भाषाकी समस्याको हल करनेमें संघ-सरकार और राज्य-सरकारोंके सिवाय और भी कअी संस्थाओंका संबंध है — जैसे, विश्वविद्यालय, न्यायालय, वकालत और दूसरे धंधे, अखबार, विद्वान लोग और जनसाधारण। अिसलिअे अन्तिम हल हासिल करनेके लिअे हम जो कुछ भी करें, अुसमें आधार कानूनकी मदद और सरकारके समर्थन तथा आश्रय — यद्यपि ये सहायताअें शक्तिशाली और अनिवार्य हैं — पर अुतना न रखा जाय, जितना कि प्रस्तावित हलके गुणों पर, अुसकी सिद्धिके लिअे बनाये गये कार्यक्रम पर तथा जनताकी बुनियादी सद्भावना और देशभक्ति पर रखा जाय। भाषाके क्षेत्रमें हम जो पेचीदा और ब्यौरेवार क्रान्ति करना चाहते हैं, वह केवल राज्यकी आज्ञासे नहीं हो सकती; यह अेक अैसा कार्य है जिसमें हमें अिससे संबंध रखनेवाली सारी संस्थाओं और राष्ट्रीय जीवनके सारे महत्त्वपूर्ण तत्त्वोंके तुरन्त मिलनेवाले अुत्साहपूर्ण सहयोगका अुपयोग करना होगा। सही दृष्टिसे देखा जाय तो हमारे अुद्देश्य और ध्येय समान हैं और सद्भावनावाले सारे भारतीय अुन्हें अपनी वस्तु मानते हैं; ये ध्येय और अुद्देश्य हमारे संविधानमें बताये गये हैं जिसे भारतीय जनताने ५।। वर्षके गंभीर विचार-विमर्शके बाद पवित्र भावसे अपनाया है। समस्या मुख्यतः काममें लिये जानेवाले साधनोंकी और अिन समान ध्येयोंको सिद्ध करनेके लिअे तय की जानेवाली गतिकी है। आजादी मिलनेके बाद पिछले सात वर्षोंमें हमें कअी महत्त्वपूर्ण और कठिन प्रश्नोंका सामना करना पड़ा है। अिसमें मुझे थोड़ी भी शंका नहीं है कि हमारी प्रजाकी राजनीतिक प्रौढ़ता तथा स्वाभाविक सद्भावना अिस प्रश्नका भी सफलतासे सामना करनेमें हमारी सहायता करेगी। मैं मानता हूं कि भाषा-संबंधी समस्याका जो हल हम पेश करेंगे, अुसमें रही कठिनाअियों और असुविधाओंको वर्तमान पीढ़ी ही तीव्रतासे अनुभव करेगी। आगे आनेवाली पीढ़ियां अुन्हें अितनी तीव्रतासे अनुभव नहीं करेंगी। आवश्यक विचार-विमर्शके बाद जो भी हल हम राजी-खुशीसे और अुत्साहपूर्वक अपनायेंगे, वह दूसरे रास्तोंकी आदी बनी हुअी वर्तमान पीढ़ीके कुछ दशकोंके बाद लुप्त हो जाने पर स्वीकार कर लिया जायगा। अिसलिअे देश अिस समस्याका जो हल अंतिम रूपसे अपनाये अुस पर आज प्रामाणिक मतभेद हो सकते हैं, परंतु अधिक महत्त्वकी बात तो यह है कि जो ध्येय और कार्यक्रम अेक बार निश्चित कर लिया जाय वह सारे देशमें हृदयसे स्वीकार कर लिया जाना चाहिये। हमें यथासंभव अिस बातकी सावधानी रखनी चाहिये कि हमारा हल वैज्ञानिक हो और भावी पीढ़ियोंके सच्चे हितोंको नुकसान न पहुंचाये। यहां भी आपकी यह संस्था हमारा बहुत अच्छा मार्गदर्शन कर सकती है। मेरी आशा और विश्वास है कि यह समस्या अैसे ढंगसे हल की जायगी जिससे भावी पीढ़ियां यह कहें कि अिस कठिन कार्यको हमने बुद्धिमानी और सुन्दर रूपमें पूरा किया। अुन्हें यह कहनेका कोअी कारण नहीं मिलना चाहिये कि हमने दीर्घकालीन राष्ट्रीय हितोंकी अुपेक्षा की, या हम विचार और अभिव्यक्तिकी नअी आदतें डालनेका प्रयत्न करनेमें आलसी, कायर और अनिच्छुक थे, अथवा हम संकुचित मानसवाले और कट्टरपंथी थे।

दुनियाके राष्ट्रसमूहमें हमने आन्तर-राष्ट्रीय दृष्टिसे प्रतिष्ठाका अूंचा स्थान प्राप्त किया है। जाहिर है कि यह आन्तर-राष्ट्रीय प्रतिष्ठा हमारी अूंची नैतिक और तटस्थ दृष्टिका तथा सहिष्णुता और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्वके विशेष दृष्टिकोणका परिणाम है,

www.vinoba.in

जो कि हमारी सांस्कृतिक विरासतकी देन है। और यह भी स्पष्ट है कि हमारी यह आन्तर-राष्ट्रीय प्रतिष्ठा, बाहर हम जिस सहिष्णुता और परस्पर लाभकारी सह-अस्तित्वकी भावनाका प्रचार करते हैं, अुसी भावनासे अपनी भीतरी समस्याओंको हल करनेकी हमारी योग्यता पर निर्भर करती है।

(अंग्रेजीसे)

आंध्रमें विनोबा — १

विनोबाजी विज्ञानके अुपासक हैं। अक्सर नये-नये प्रयोग करना अुनका सहज स्वभाव ही बन गया है। जबसे आंध्रमें प्रवेश हुआ है, संध्या समय जो प्रार्थना होती है अुसमें सिर्फ स्थितप्रज्ञके लक्षण और अेकादश व्रतका पाठ बोला जाता है। अुसके पहले आम जनताको वे पांच मिनट मौन रखनेका आदेश देते हैं। आश्चर्यकी बात है कि हजारोंका समूह, जिसमें बालगोपाल भी शामिल होते हैं, चाहे वह समूह सर्वकोटा जैसे छोटे गांवका हो या श्रीकाकुलम् जैसे शहरका हो, अुनके आदेश पर पांच मिनट अत्यन्त शांतिसे मौन प्रार्थना करता है। विनोबाजी कहते हैं कि अिस मौन-प्रार्थनामें परमात्माके जो अनंत गुण हैं अुनका चिंतन करें। जैसे खाना आवश्यक है वैसे मनुष्यको ज्ञान भी आवश्यक है। परमेश्वरने हमें बुद्धि दी है अुसका अुपयोग करके ज्ञान हासिल करना चाहिये। और यह ज्ञान जिसने हासिल किया है अैसे स्थितप्रज्ञके लक्षण हम रोज गाते रहेंगे तो अुसका परिणाम अवश्य होगा।

सभामें बारिश बरसती है, जमीन पर कीचड़ हो जाता है, बीच-बीचमें लोग अशांत होते हैं, व्यवस्थापक अुनको शांत करनेकी कोशिश करते हैं। परन्तु विनोबाजी व्यवस्थापकोंको आज्ञा देते हैं कि व्यवस्थापकोंकी मेरी सभामें जरूरत नहीं। और अुधर जनताको कहते हैं, "क्या आपका दंडशक्ति पर विश्वास है? अगर नहीं तो आप फौरन बैठ जाअिये। नहीं तो ये हिंसावाले कहेंगे कि अरे अहिंसावालोंकी तो हार हो गयी।" जनता यह शब्द सुनती है, अुस आवाहनको स्वीकार करती है और शांत हो जाती है। फिर अुस सभामें दंडवालोंका, व्यवस्थापकोंका कुछ काम नहीं रहता। अिस तरह शासन-मुक्तिकी कल्पना जनता सहज मंजूर करती है अिसकी प्रतीति होती है।

अक्सर टीका की जाती है कि आजकलके विद्यार्थी अनुशासनहीन बन गये हैं, अुद्धत बन गये हैं। परन्तु अनुशासनप्रिय विनोबाने अिस विषयकी गहराअीमें जाते हुअे श्रीकाकुलम्में कहा, "मेरा तो यह अनुभव है कि जिस सभामें विद्यार्थियोंकी संख्या अधिक रहती है अुस सभामें शांति अधिक रहती है। यह अनुभव बताता है कि हिन्दुस्तानके विद्यार्थी अच्छी तरह शांति रखनेवाले, बड़े प्रेमी और विनयी हैं। आज अुनकी जो विद्या है अुसमें अैसी कोअी चीज नहीं है जिससे कि शिक्षकोंके लिअे अुनके मनमें आदरभाव पैदा हो। अिसके बावजूद भी वे शांति रखते हैं और शिक्षकोंके लिअे आदरभाव रखते हैं अिसका हमें आश्चर्य होता है। जिस दिन भारतको आजादी हासिल हुअी अुस दिन हमने कहा कि जैसे नये राज्यके साथ नया झंडा आता ही है, वैसे नये राज्यके साथ नयी तालीम आनी ही चाहिये। अिस देशको दास्यमें रखनेवालोंको जो विद्या अनुकूल मालूम होती थी वही विद्या यहां अब चलानेमें बुद्धिहीनताके सिवाय हम और कुछ नहीं देखते। अब आठ सालके बाद कांग्रेसने प्रस्ताव किया है कि सारे देशमें नयी तालीम, जो गांधीजीने चालू की थी वह चालू की जाय। हम सुझाते हैं कि यह तालीम, जो आज दी जा रही है फौरन् बंद होनी चाहिये और देशमें अैसी तालीम चलनी चाहिये जिससे कि अमीर और गरीब सब समान ढंगसे सीखें। तालीम स्वतंत्र होनी चाहिये। हम तो दिमागकी आजादी चाहते हैं। बुद्धि-स्वातंत्र्य नहीं रहा तो आजादी नाममात्रकी होगी। हम अनुशासन चाहते हैं, परन्तु जबरदस्तीसे जो अनुशासन होता है वह अनुशासन नहीं रहता, गुलामी हो जाती है। अिसलिअे हम प्रेमका अनुशासन, सहज अनुशासन चाहते हैं। अिस प्रेमयुक्त अनुशासनका आरंभ घरसे ही होना चाहिये। और घरसे दंडनीतिका खंडन होना चाहिये। तालीमके अलावा दूसरी जो महत्त्वकी बात है, अुसका विनोबाजीने जिक्र किया, "सब जगह सिनेमा चल रहा है। सिनेमामें जो चित्र दिखाये जाते हैं, वे शांति-स्थापनाके लिअे अनुकूल नहीं होते हैं। दिल्लीमें माताओंकी सभा हुअी थी। अुन्होंने सरकारसे प्रार्थना की थी कि कृपा करके सिनेमासे हमारे बच्चोंको बचाअिये। हम पूछना चाहते हैं कि अिस तरहसे सिनेमा जहां चलते होंगे, सोनेके पहले लड़कोंके दिमाग पर बुरे विचारोंका परिणाम रहता होगा, वहां लड़कोंमें अगर अनुशासनहीनता दीखती है तो अिसकी जिम्मेवारी किस पर है? हम सिनेमाके बिलकुल विरुद्ध नहीं हैं। अच्छे सिनेमा भी हो सकते हैं। परन्तु हर चीजकी मर्यादा होती है।"

विविध स्वरोंमें संगीत निर्माण होता है। वैसे ही अपने देशमें जो तरह-तरहकी भाषायें हैं अुसमें से हम संगीत निर्माण कर सकते हैं। विनोबाजीने अिस भाषाभेदका जिक्र करते हुअे सर्वकोटामें कहा था, "अपने देशमें जितनी भाषायें हैं अुन सबको हम अपने देशका शृंगार समझते हैं। अेक-अेककी क्या मधुरता, सुन्दरता, शक्ति है यह हम जानते हैं। क्योंकि हिन्दुस्तानकी सब भाषायें सीखनेकी कोशिश हमने की है। परन्तु भाषाका हमें अभिमान नहीं रखना चाहिये, हम प्रेम रख सकते हैं। जहां भाषाभेद है वहां झगड़ेका क्षेत्र नहीं, बल्कि समन्वयका, संगीतका, प्रेमका क्षेत्र है। भाषावार प्रांतरचनाको हमारे देशकी ताकतके लिअे हम जरूरी मानते हैं। और अगर भाषावार प्रांतरचना नहीं होती है तो स्वराज्यके कोअी मानी नहीं होते हैं। परन्तु यह अभिमान और द्वेषके लिअे नहीं, यह तो जनताकी सहूलियतके लिअे, भाषाके विकासके लिअे और समन्वयके लिअे होना चाहिये। भाषाके कारण हमारे देशमें आज काफी बेचैनी है। अुसके कारणमें मैं आज नहीं जाना चाहता। पर बेचैनीकी कोअी आवश्यकता मुझे नहीं मालूम होती है। शांतिसे सोचनेकी आवश्यकता है।"

अभी जो सीमा-कमीशन बना है अुसके कामका जिक्र करते हुअे विनोबाजीने कहा, "अुस समितिकी रिपोर्ट प्रकाशित होगी अुस पर शांतिसे गौर करना चाहिये और छोटे-छोटे भेदोंमें नहीं पड़ना चाहिये। परन्तु कोअी बड़ा मतभेद हो तो जरूर प्रकाशित किया जाय। अपना मतभेद प्रकाशित करनेमें कोअी अुज्र नहीं है और अिस तरहका मतभेद प्रकाशित करनेका अधिकार और हक सबको है। परन्तु यह सारा विचार-विनिमयके लिअे, परस्पर विमर्षके लिअे हो, परस्पर झगड़ेके लिअे नहीं। हिन्दुस्तानकी बहुत सारी भाषायें बहुत समर्थ हैं। और स्वतंत्रतामें भाषाका पूर्ण विकास करना जरूरी है और होना भी चाहिये।"

भारतमें कपासका हिमालय है, अुसमें से खादीकी गंगाका अुगम हुआ है। श्रीकाकुलम् जिलेमें हर जगह अिस खादीकी गंगाका दर्शन हो रहा है। पौंडुरके ग्रामवासियोंने विनोबाजीको सूत्रदान तुलाधारके रूपमें देनेकी अिच्छा प्रकट की। परन्तु अिसका अिनकार करते हुअे विनोबाजीने कहा, "पहले जमानेमें राजाओंका तुलादान होता था और सुवर्णभार तौल करके वह दान प्रजाको बांट देते थे। परन्तु हम सुवर्णकी कोअी कीमत नहीं करते हैं। अिसलिअे सुवर्ण-तुलासे सूत्र-तुला हजार गुनी पवित्र है। पर शरीरकी महिमा बढ़ाना गलत है। हम अपनेको राजा नहीं समझते हैं और न किसीको राजा मानते हैं। हम तो आपके सेवक हैं।

२४-१०-'५५ कु० वे०

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

५ नवम्बर १९५५

विज्ञानकी परिभाषा

माध्यमिक स्कूलोंमें शिक्षाके माध्यमकी तरह विद्यार्थियोंकी मातृभाषा या प्रादेशिक भाषाके प्रयोगके साथ अुसमें समान और अुपयुक्त वैज्ञानिक शब्दावलीके निर्माणका सवाल पैदा हुआ। गुजरातीमें यह काम शुरू करनेका बीड़ा गुजरात विद्यापीठने — जिसे सन् १९२० में गांधीजीने स्थापित किया था — अुठाया। अिस संस्थाके अनेक अुद्देश्योंमें अेक अुद्देश्य यह भी है कि भारतमें शिक्षाका प्रचार विद्यार्थीकी प्रादेशिक भाषाके जरिये हो और अुसके साथ-साथ स्नातक परीक्षाकी अवस्था तक हिन्दी या, जैसा कि अुसे अुस समय कहा जाता था, हिन्दुस्तानी अनिवार्य रूपसे पढ़ायी जाय। अिस अुद्देश्यकी सिद्धिके लिअे विद्यापीठ अपने आरंभसे ही कोशिश करता आ रहा है, साथ ही वह गुजरातमें हिन्दीके अध्ययनका प्रचार करता है और अुसके लिअे पुस्तकें प्रकाशित करता है।

विज्ञानके अध्ययनके लिअे अुपयुक्त शब्दावलीके निर्माणका काम विशेष रूपसे अुल्लेखनीय है। अभी तक वह गणित, पदार्थविज्ञान, रसायनशास्त्र, अर्थशास्त्र, प्राणिशास्त्र और वनस्पतिशास्त्रकी शब्दावलियां प्रकाशित कर चुका है। चूंकि अुस समय तात्कालिक आवश्यकता अेस० अेस० सी० या प्रवेशिका परीक्षा तकके ही लिअे थी अिसलिअे शब्दावलीका निर्माण भी अुसी सीमा तक हुआ। अब चूंकि गुजरात युनिवर्सिटी भी क्रमशः शिक्षणके माध्यमके तौर पर गुजराती शुरू करनेवाली है अिसलिअे विद्यापीठ अपने अिस प्रयत्नको कालेजकी शिक्षाकी सीमा तक पहुंचानेके लिअे आगे बढ़ा रहा है।

गुजरातीमें पारिभाषिक शब्दोंके निर्माणका यह काम कोअी बीस वर्ष पूर्व स्कूलों और कालेजोंके अध्यापकोंकी मददसे शुरू किया गया था और अुसके लिअे अेक समिति बनायी गयी थी। अिस समितिने पहले अिस कठिन सवालको हल करनेकी अपनी दृष्टि निर्धारित की और तत्संबंधी कुछ सामान्य सिद्धान्त निश्चित किये। अिस कार्यमें अुसे स्वर्गीय किशोरलालभाअी मशरूवालाकी सलाह-सूचना आदि प्राप्त करनेका सौभाग्य मिला था और अुक्त सामान्य सिद्धान्त अुनके ही मार्गदर्शनमें बनाये गये थे। मुझे यह कहते हुअे भी बड़ी खुशी होती है कि अिस तरह जो शब्दावली बनी अुसे गुजरातमें बढ़ती हुअी मान्यता प्राप्त हुअी है और हाअीस्कूलोंके लिअे पुस्तकें लिखनेवाले कअी लेखकोंने अपनी रचनाओंमें अुनका ही अुपयोग किया है।

अिस संबंधमें अेक नयी पैदा हुअी विचारधारा यह है कि पारिभाषिक शब्दोंका निर्माण पहले हिन्दीमें किया जाय और वे संस्कृत भाषाके आधार पर बनाये जायं, ताकि वे दूसरी भाषाओंके लिअे भी सर्वाधिक मान्य हो सकें। और यह कहा जाता है कि ये शब्द सब भाषाओंको स्वीकार कर लेने चाहिये। अिस विचारकी सावधानीके साथ जांच करनेकी जरूरत है।

अिस बातका जरूर स्वागत होना चाहिये कि हमारी भाषाओंमें पारिभाषिक शब्दोंकी जितनी समानता हो सके होना चाहिये। लेकिन यह भी जाहिर है कि अिस कामका पहला और प्रमुख अुद्देश्य यह नहीं हो सकता। हमारा पहला अुद्देश्य तो अपनी भाषाओंका अुपयोग शुरू करना और अुनमें विज्ञानके विचारोंको — जो ज्यादातर पश्चिममें पैदा हुअे हैं — प्रकट करना है। अिसलिअे यह जरूरी है कि हम अिस कामको अिस तरह करें कि अपनी भाषा पर कोअी जोर-जुल्म न हो, अुसे किसी प्रकारकी हानि न पहुंचे। यह याद रखना चाहिये कि अिस कार्यके पीछे भाषा पर किसी विशिष्ट शब्दावलीको लादनेकी भावना नहीं होनी चाहिये।

जिस तरह हिन्दीकी अपनी प्रकृति है, अुसी तरह हमारी और सारी भाषाओंकी भी अपनी प्रकृति है और संविधानके शब्दोंमें कहें तो अुनकी समृद्धि भी हमें प्रत्येकके भंडारमें दूसरे शब्दोंको 'अुसकी प्रकृतिको आहत किये बिना' ही मिलाकर सिद्ध करना चाहिये। हम जानते हैं कि संस्कृतके कअी शब्द हमारी विविध भाषाओंमें विविध अर्थोंमें प्रयुक्त होते हैं। अिसलिअे सवालको अिस तरह सरल और सीधा बना देनेसे हमारा काम नहीं चलेगा कि पहले वे हिन्दीमें बना लिये जायं और फिर ज्योंके त्यों दूसरी भाषाओंमें दाखिल कर दिये जायं। हरअेक भाषा अिस सवालको अपनी प्रकृतिके अनुसार हल करेगी; हां, वह अिस बातकी कोशिश जरूर करेगी कि शब्द-रचनामें दूसरी भाषाओंके साथ ज्यादासे ज्यादा समानता हो और अिस प्रयत्नमें वह दूसरी भाषाओंकी मददका स्वागत करेगी। दूसरी भाषाओंमें अिस संबंधमें जो काम हुआ हो, अुससे अुन्हें लाभ अुठाना चाहिये। अच्छा तो यह होगा कि विविध भाषाओंमें चल रहे अिस तरहके कामको संबद्ध करनेवाला अुपयुक्त तंत्र खड़ा किया जाय, जो शब्दोंकी समानता सिद्ध करनेके लिअे आवश्यक सारी सामग्री अुपलब्ध कर दे और अिस तरह अिस काममें लेखकोंकी और शिक्षकोंकी मदद करे। विचारोंके पारस्परिक आदान-प्रदान और निर्णयके लिअे अैसा तंत्र जरूर अुपयोगी होगा।

जैसा कि मैंने अूपर बताया है, गुजरात युनिवर्सिटीने गुजरातीके जरिये पढ़ाना शुरू किया है। अिसलिअे अिस प्रश्न पर अुसने भी ध्यान दिया है और अभी कुछ दिन पहले अपने विभागों और संबद्ध संस्थाओंको अिस प्रकार आदेश दिया है:

> १. "विविध विषयोंको गुजरातीमें पढ़ानेके लिअे माध्यमिक पाठशालाओंमें और अुनमें प्रयुक्त पाठ्य-पुस्तकोंमें जिस शब्दावलीका अुपयोग होता है, कालेजोंमें भी अुन विषयोंको पढ़ानेके लिअे आधारके तौर पर अुसी शब्दावलीको कायम रखा जाय और आवश्यक अगली शब्दावली अुसीके आधार पर तथा अुसी पद्धतिके अनुसार बनायी जाय।
>
> २. "आन्तरराष्ट्रीय संज्ञा (Symbol), संकेत और सूत्र अुसी रूपमें कायम रखे जायं, जिस रूपमें आज चल रहे हैं।
>
> ३. "अगर अुपयुक्त गुजराती पर्याय अुपलब्ध न हों या तत्काल बनाना संभव न हो तो अंग्रेजीके ही वैज्ञानिक शब्द कायम रखे जायं।
>
> ४. "कमेटीका खयाल है कि नअी शब्दावलीमें आवश्यकता होने पर परिवर्तन करना आसान रहे अिसलिअे यह बेहतर होगा कि जिन हिन्दी या गुजराती पर्यायोंका प्रयोग किया जाय, अुनके साथ अभी कुछ समय तक कोष्ठकोंमें अंग्रेजी पर्याय भी दिये जायं।"

अब मैं वैज्ञानिक शब्दावलीके निर्माणके लिअे गुजरात विद्यापीठ द्वारा स्वीकृत वे सामान्य सिद्धान्त देता हूं जिनका अुल्लेख मैं आरंभमें कर आया हूं। मुझे कहते हुअे खुशी होती है कि गुजरातके शैक्षणिक क्षेत्रोंमें अुनका अच्छा स्वागत हुआ है और अुन्हें स्वीकार किया गया है।

> १. यदि यह अुद्देश्य सिद्ध करना हो कि जो शब्द बनाये जायं, अुनका शिक्षणके क्षेत्रमें व्यापक प्रयोग हो तो जाहिर है कि अिन शब्दोंको सरल और सहज होना चाहिये। यदि वे

www.vinoba.in

क्लिष्ट होंगे या अुनका अुच्चारण अटपटा या ज्यादा लंबा होगा तो यह हेतु सिद्ध नहीं होगा।

२. अिस अुद्देश्यको सिद्ध करनेके लिअे अेक तो यह बात याद रखना चाहिये कि हमें अपनी भाषाकी आन्तरिक शक्तिका अुपयोग करना नहीं भूलना है। यानी नये शब्द गढ़नेके लिअे संस्कृत अथवा अरबी मूलकी ओर दौड़नेकी वृत्तिको — जो अकसर देखनेमें आती है — ज्यादा प्रोत्साहन नहीं मिलना चाहिये। अिस संबंधमें अेक बात यह भी याद रखना चाहिये कि हिन्दी और मराठी जैसी भाषाओंके साथ, जो गुजरातीके बहुत नजदीक हैं, अधिक समानता तद्भव शब्दोंकी ओर जानेसे मिलेगी।

३. गुजरातीने अपनी निजी शक्तिके जरिये आज तक कितने ही पारिभाषिक शब्द अपनाये हैं — कहीं अुसने अुनके लिअे सरल पर्यायोंकी योजना की है तो कहीं अपनी अुच्चारण-पद्धतिके अनुसार अुसने अुनके रूपोंमें थोड़ा परिवर्तन कर दिया है; जैसे, आगगाड़ी, दाक्तर, मोटर, सलेपाट, अिंजिन वगैरा। अैसे शब्द बनायी जा रही पारिभाषिक शब्दावलीमें ज्योंके त्यों अपना लेने चाहिये।

४. कुछ शब्द अपनी भाषामें अुनके मूल रूपमें ही प्रचलित हो गये हैं; जैसे ट्राम, पम्प, ऑक्सीजन आदि। अैसे शब्द जैसेके तैसे ले लिये जाने चाहिये। अैसा करनेसे चलती हुअी यानी जीवंत पारिभाषिक शब्दावली तैयार हो सकेगी।

५. सामान्यतः अपनी भाषामें हम विदेशी भाषाके संज्ञा या विशेषण शब्द तो ले सकते हैं लेकिन क्रियापद नहीं ले सकते। क्रियापद लिये जायं तो भी अुनके साथ 'करवुं' या 'थवुं' जोड़ना पड़ता है और अुनका अुपयोग संज्ञा शब्दोंकी ही तरह करना पड़ता है। अुदाहरणके लिअे, 'ऑक्सीडाअिज़' करवुं या थवुं। अिसलिअे अुचित यह होगा कि संज्ञा या विशेषण शब्द ही लिये जायं। क्रियापदोंकी आवश्यकता हो तो अुन संज्ञा या विशेषण शब्दोंसे ही नामधातु बनानेकी युक्ति काममें लाकर क्रियापद बनाये जायं। (अुदाहरणके लिअे, क्लोरिनसे क्लोरवुं, ऑक्सीजनसे ओक्सववुं)

६. कितने ही पदार्थ — अैसे पदार्थ रसायनशास्त्रमें बहुत हैं — गुजरातीके लिअे बिलकुल नये और अपरिचित हैं। अुदाहरणके लिअे क्लोरिन, रेडियम आदि। अुन्हें संज्ञाकी तरह अुनके अुसी रूपमें ले लेना चाहिये। हां, अुनकी गुजराती जोड़णी निश्चित कर लेनी चाहिये। 'सल्फेट', 'ऑक्साअिड' जैसे शब्द अिसी प्रकारके माने जाने चाहिये।

७. कुछ पदार्थोंके लिअे अपने शब्द भी मिलेंगे; जैसे Sulphur के लिअे गंधक, Iron के लिअे लोह आदि। अैसे शब्दोंके स्थानमें गुजराती शब्द ही रखना चाहिये। अगर आंतरराष्ट्रीय आवश्यकताके लिअे यह जरूरी समझा जाय कि विद्यार्थीको अुसका अंग्रेजी पर्याय भी जानना चाहिये तो गुजराती शब्दके साथ अुसे भी कोष्टकमें रखा जाय।

८. वह आन्तरराष्ट्रीय शब्दावली जिसे हमें जरूर जानना चाहिये सचमुच तो संकेतों, चिन्हों और सूत्रोंकी है। अुसे स्वीकार कर लेना चाहिये। अुदाहरणके लिअे गणितमें +, −, × आदि चिन्ह और रसायनशास्त्रमें H_2O, H_2SO_4 आदि सूत्र। अिन सूत्रोंमें अक्षर रोमन रहें और अंक गुजराती।

९. सुविधाके लिअे विज्ञानमें कअी शब्दोंके रूप संक्षिप्त कर लिये जाते हैं; जैसे time के लिअे t. और velocity के लिअे v. का अुपयोग होता है। अैसे शब्दोंके लिअे गुजरातीमें जो पारिभाषिक शब्द निश्चित किये गये हों, अुनका ही संक्षेप करना चाहिये। अुदाहरणके लिअे velocity — वेग, संक्षिप्त चिन्ह — वे०; time — काल, संक्षिप्त चिन्ह — का०; v. t. — वे० का०। अिन संक्षिप्त चिन्होंका अुपयोग करते रहनेसे वे भी अंग्रेजी संक्षिप्त चिन्होंकी ही तरह रूढ़ हो जायंगे।

१०. अन्तमें यह ध्यानमें रखना चाहिये कि नये शब्द बनानेके लिअे केवल कुछ सामान्य सिद्धान्तोंका ही निर्देश किया जा सकता है। सचमुच तो शब्द-रचनाकी अपनी अेक कला है। अिसलिअे पूरे सुनिश्चित नियम बताना संभव नहीं है। कुछ मर्यादाअें ही बतायी जा सकती हैं:

(क) महज शाब्दिक अनुवाद काम नहीं देगा; जैसे कि Polarization के लिअे 'ध्रुवीभवन'।

(ख) भाषामें नये शब्दोंकी रचना अथवा अुन्हें परिवर्तनके साथ अपना लेनेकी जितनी युक्तियां हों अुनका अुपयोग करनेके लिअे तत्पर रहना चाहिये।

(ग) जिन शब्दोंसे अपनी भाषाके वाक्यका सामान्य प्रवाह टूटता मालूम हो, वे ठीक नहीं कहे जा सकते। क्योंकि अिस दोषके कारण वे भाषामें रूढ़ नहीं हो सकेंगे।

(घ) नया बनाया शब्द जहां तक संभव हो अैसा होना चाहिये कि अपने अर्थका सूचन कर सके और अुससे दूसरे साधित रूप बनाये जा सकें।

(च) अेक ही अंग्रेजी शब्द विभिन्न विज्ञान-शाखाओंमें विभिन्न अर्थ देनेवाला हो सकता है। यह जरूरी नहीं माना जाना चाहिये कि अुसका गुजराती पर्याय भी अुतने सब अर्थ देनेवाला ही हो। वैसा शब्द मिल जाय तो वह त्याज्य नहीं होगा। लेकिन न मिले तो अेक ही अंग्रेजी शब्दके विविध शाखाओंमें अर्थके अनुसार विविध गुजराती पर्याय दिये जा सकते हैं।

(छ) नया शब्द बनाते हुअे अुसकी व्यंजना पर दृष्टि होना चाहिये, अंग्रेजीमें प्रयुक्त रूप पर नहीं। अुदाहरणके लिअे, Anti-clockwise शब्दके लिअे गुजराती शब्द निश्चित करना हो तो Anti, clock, और wise शब्दोंका नहीं बल्कि पूरे अर्थका विचार करना होगा। गुजरातीमें अुसके लिअे 'डाबेरी', 'घंटी-फेरे', 'अवळुं' जैसे शब्दोंका प्रयोग भली-भांति किया जा सकता है।

अन्तमें यह याद रखना चाहिये कि विज्ञानकी हमारी भाषा तभी बढ़ेगी और समृद्ध बनेगी, जब हम अुसका अुपयोग करना शुरू करेंगे। केवल नये शब्द गढ़ते रहनेसे कुछ नहीं होगा। लेखकोंको विज्ञानके बारेमें सामान्य पाठकोंके लिअे अुपयुक्त भाषामें लिखना शुरू करना चाहिये। अिस दिशामें हमारी भाषाओंमें प्रयत्न आरंभ हो चुका है। जरूरत अिस बातकी है कि अिन प्रयत्नोंको वेग दिया जाय और बढ़ाया जाय तथा विभिन्न लेखक जिन शब्दोंका अुपयोग कर रहे हैं अुनमें से सबसे अधिक स्वीकार्य शब्दोंकी खोज की जाय और अिस तरह स्वाभाविक ढंगसे समानता सिद्ध की जाय।

१०-१०-'५५ **मगनभाई देसाई**

(अंग्रेजीसे)

राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी

[दूसरा संस्करण]

लेखक: **गांधीजी; अनु० काशिनाथ त्रिवेदी**

कीमत १-८-० डाकखर्च ०-६-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

www.vinoba.in

अनोखा सत्पुरुष चल बसा

पू० श्रीकृष्णदासजी जाजू, जिन्हें हम काकाके संबोधनसे पुकारते थे, सचमुच ही बापूजीके बाद हमारे परिवारके काकाजीका पूरा फर्ज अदा करते थे। सबकी सार-संभाल, सबके सुख-दुःखकी चिंता, सबकी कठिनाअियोंको सुलझानेमें मदद — अिसको अुन्होंने अपना फर्ज ही समझ लिया था। पू० बापूजीके बाद हमारे परिवारमें तीन बड़े बचे थे। पू० किशोरलालभाअी, पू० जाजूजी अेवं पू० विनोबाजी। पू० किशोरलालभाअीका स्थान बड़े भाअीका था, जो अंत समय तक अुसे निभाते हुअे हमें छोड़ कर चले गये। पूज्य काकाजीने कुछ लम्बे समय तक अिस फर्जको निभानेकी गरजसे ही हार्नियाका आपरेशन कराना मंजूर किया था। डॉक्टरकी राय थी कि यदि आरामसे अेक जगह रहा जाय तो आपरेशनकी जरूरत नहीं है। लेकिन काकाजीके लिअे तो 'राम काज कीन्हें बिना मोहि कहां विश्राम?' हनुमानका यह वचन सार्थक था। तीसरे पू० विनोबाजी, जो अपने रुग्ण शरीरको लेकर केवल आत्मबलसे ही भूदानका गोवर्धन पहाड़ अपने सिर पर अुठाये घूम रहे हैं। लेकिन कुटुम्बके बारेमें जो दिलचस्पी और लगन पू० काकाजीमें थी, वह अुनकी अपनी निराली वस्तु थी।

बापू और विनोबाके कामसे अुन्हें अेक क्षणका भी विश्राम लेना असह्य था। सूर्यकी गतिकी भांति अुनका कार्य सतत चलता ही रहता था। आपरेशनके बाद हार्नियाका कष्ट मिटनेसे अिस कामको और भी वेगसे कर सकेंगे, अिस अुत्साहसे ही आपरेशनकी बात अुनके मनको रुची थी। डॉ० शर्माकी श्रद्धा और कुशलताने भी अुन्हें राजी करनेमें मदद की थी। १४-१०-'५५ को आपरेशन बड़ी सफलतापूर्वक सवाअी मानसिंह अस्पताल जयपुरमें हुआ। किसी प्रकारकी चिन्ताको कोअी स्थान नहीं था। वड़े आनन्दके साथ प्रगति कर रहे थे। आज रातको डेढ़ बजे जगे और पानी मांगा। नारायण, अुनका कनिष्ठ पुत्र, सेवामें था। अुठा और पानी दिया। बोले, 'आज कुछ गर्मी है क्या?' नारायणने कहा, 'नहीं, गर्मी तो नहीं है।' 'अच्छा तो खिड़की खोल दो।' खिड़की खोली गअी। बस गर्दन ढीली पड़ गअी। नारायणने डॉक्टरोंको पुकारा। डॉक्टर पहुंचे पर वहां तो १०-१५ मिनटमें ही हंस अुड़ चुका था।

'मेरे मन कुछ और थी कर्ताके कुछ और।'

पू० काकाजीका जीवन अपने ढंगका अनोखा था। अुनकी अपनी मौन साधना बड़ेसे बड़े योगिराजोंको भी मात करनेवाली थी।

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक् शरीर-विमोक्षणात् ।
काम-क्रोधोद्भवं वेगं स मुक्तः स सुखी नरः ॥

गीताके अिस श्लोकके अनुसार जीवनको अणिशुद्ध बनानेकी अुनकी लगन अुनके रोम-रोमसे प्रगट होती थी। भूदान, संपत्तिदान, व्यवहार-शुद्धिके लिअे अुनके मनमें जो ज्वालामुखी धधक रहा था अुसकी आंच और प्रकाश अुनके शब्द-शब्दसे टपकता था।

अुन्होंने सालों तक मध्यप्रदेश (महाराष्ट्र) और अखिल भारत चरखा-संघके मंत्रीका काम किया। अुन्होंने मध्यप्रदेशके मुख्यमंत्री और भारतके वित्तमंत्री बननेसे नम्रतापूर्वक अिनकार किया। अुनके लिअे यह बड़ी बात नहीं थी, सहज और सरल काम था, क्योंकि अुनके जीवनका लक्ष्य अिससे कहीं बड़ा था।

हरिपुरा कांग्रेसके समय प्रज्ञाचक्षु पं० सुखलालजी बनारसके अेक प्रोफेसरका परिचय कराते हुअे बोले, 'देखो बलवंतसिंह, अिन भाअीका परिचय यदि मैं अिन शब्दोंमें कराअूं कि अिनके पास अितनी डिग्रियां हैं, बड़े प्रभावशाली वक्ता हैं, बड़े बुद्धिमान हैं, तो ये चीजें तो औरोंके पास भी हो सकती हैं। मैं अितना ही कह सकता हूं कि ये मेरे सज्जन मित्रोंमें से अेक हैं। बस यही अिनका परिचय है।' अुनके अिस परिचयका मेरे दिल पर बड़ा असर हुआ और कभी भी मैं अुनकी वह बात भूलता नहीं हूं।

सचमुच पू० काकाजी अेक सज्जन पुरुष थे। अुनके दर्शनसे युधिष्ठिरकी याद आती थी। लेकिन व्यासजीने युधिष्ठिरके मुखसे 'नरो वा कुंजरो वा' कहलाकर अुनके जीवनको जो धब्बा लगाया है, अिस प्रकारका धब्बा पू० काकाजीके जीवनमें मिलना कठिन है। हमारे परिवारके वे 'प्रिवी कौंसिल' थे। किसी व्यावहारिक प्रश्नके लिअे बापूजीके पास समय न होता तो कहते, 'जाओ, जाजू साहबके पास चले जाओ, जैसा वे कहें वैसा करो। फिर मेरे पास नहीं आना।'

जब सेवाग्राममें बापूजीकी लंगोटीमें से संसार बढ़ा तो मैंने पूज्य जमनालालजीके खेती-कार्यकर्ताओंको वहांसे अपना झोली-झंडा अुठानेका नोटिस दिया। अुन्होंने पू० जमनालालजीसे कहा कि अगर मालगुजारी रखनी हो तो यहां खेती रखना भी जरूरी है। पू० जमनालालजीने बापूजीसे सारे सेवाग्रामका कब्जा देनेकी बात की, क्योंकि वे तो बापूजीके वहां जाते ही अुस गांव पर तुलसीपत्र रख चुके थे। लेकिन बापूजी जमींदार बनना पसंद नहीं करते थे। आश्रमको तो सिर्फ काश्तकी जमीन चाहिये थी। प्रश्न खड़ा हुआ 'या तो सब लो नहीं तो जमीन भी नहीं मिलेगी'। अिस पर मेरी और पू० जमनालालजीकी बापूजीके सामने ही मीठी टक्कर भी हुअी, क्योंकि पू० जमनालालजी मीठे थे। मामला पू० काकाजीके कोर्टमें गया। अुन्होंने फैसला दिया कि जमींदारीके साथ काश्तकी जमीनका कोअी सम्बन्ध नहीं है। जमनालालजीकी हार हुअी और मैं जीता।

पू० काकाजीका प्रथम दर्शन मुझे वनस्थली (अुस समयकी जीवन-कुटीर), राजस्थानमें १९३४ में ही हुआ था। लेकिन १९३५ में मैं जब बापूजीके साथ मगनवाड़ी वर्धा और बादमें सेवाग्राम गया तो सच्चा परिचय हुआ। जब गन्नेका रस चालू होता तो मैं अुनके पास जाकर पूछता कि रस चालू हो गया है कितना भेजूं। पूछते, 'भाव क्या रखा है?' मैं कहता, 'आप भावकी झंझटमें क्यों पड़ते हैं?' कहते, 'अरे भाअी, मुझे अपना हिसाब देखना पड़ेगा कि कौनसी चीज कम करके रस लिया जा सकता है।' अुस समय अुनके मासिक खर्चका बजट ३० रु० था। अगर मैं आधा सेर भेजूं और अुनको डेढ़ पावकी जरूरत होती तो दूसरे दिन अुतना कम भेजनेको कहते।

जबसे मैं राजस्थानमें आया तबसे वे जब सीकर आते तो मेरे पास ही गोशालामें ठहरते और कहते, 'देखो आश्रमके लोग साग अधिक खाते हैं, मेरे लिअे अुस हिसाबसे नहीं बनाना है।' अुनका हिसाब तोलोंका था।

अेक बार अुन्हें सीकरसे अजमेर जाना था, मैं भी अपने कामसे अुधर जा रहा था। साथ ही गया क्योंकि वे किसीको सेवाके लिअे साथ नहीं रखते थे और जहां तक संभव होता तीसरे दर्जेमें ही सफर करते थे। फुलेरासे गाड़ी बदलनी थी। वहांसे अजमेरके दो डिब्बे लगते थे। मैंने अेक सीट पर अुनका बिस्तर लगा दिया। देख कर बोले, 'अरे भाअी, तुमने मेरा बिस्तर बिछा दिया तो दूसरे लोग कहां बैठेंगे? अिसे समेट लो।' मैंने समेट लिया। गाड़ीमें खूब भीड़ हो गअी। अजमेर तक काफी कष्टमें गये, लेकिन अुफ तक न की। सीकरमें मैंने अुन्हें थोड़ी मालिशके लिअे राजी कर लिया और यह भी सूचना की कि आप किसीको साथमें रखा करें, अब आपकी अुम्र अकेले घूमनेकी नहीं है। थोड़ी-थोड़ी मालिश भी कराते रहें तो शरीरको मदद

www.vinoba.in

मिल सकती है। बोले, 'अरे भाओ, अब शरीरको और कितने दिन रखना है? अिससे बहुत काम लिया है, अिसके लिअे दूसरेका समय क्यों खर्च करूं?'

जब २ अक्तूबरको जयपुर आये तो मैंने यहां आकर मेरी कुटी देखनेकी बात की। हंस कर बोले, 'अरे भाओ, वह जमीन तो मैंने पवित्र की है। मैं वहां गया था। अब समय नहीं है।' पर मैंने ८ तारीखको अुन्हें राजी कर ही लिया। यहां आये, डॉ० शर्मा भी साथ थे। अुनको अमेरिका आदिकी बहुतसी बातें सुनाते रहे। मैं भोजन बनाने लगा तो बोले, 'देखो, बलवन्तसिंह, तुम आश्रमवासी हो और आश्रमवासियोंको भोजनकी झंझटमें नहीं पड़ना चाहिये। आओ, मेरे पास बैठकर कुछ बात करो।' मैंने कहा, 'आपकी बात तो ठीक है लेकिन स्वभाव पड़ गया है अुसका क्या करूं?'

'अच्छा तो जल्दी खिला दो।' बड़े प्रेमसे भोजन किया और सब देख कर चले गये। मुझे क्या पता था कि सचमुच अिस स्थानको पवित्र करनेका वह अन्तिम दिन था।

पिछले साल राजस्थान गोसेवा-संघकी सदस्यताका गायके घीका नियम कुछ ढीला करनेकी सूचना आअी। हम लोग कुछ ढीले पड़े। प्रश्न काकाजीके पास गया तो कड़क कर बोले, 'अगर तुम लोग राजस्थानमें रहकर भी गायके घीका व्रत नहीं पाल सकते तो गोसेवा कैसे करोगे? मैं तो सारे हिन्दुस्तानमें घूमता हूं और गायके घी-दूधके व्रतका पालन करता हूं। अगर थोड़ी अड़चन भी आये तो अुसे सहन करनेकी तैयारी होनी चाहिये।' बस, हमारे पास अिसका क्या अुत्तर हो सकता था? हम सावधान हो गये और अपने व्रतको ढीला नहीं किया। यह थी अुनकी नियम-पालनकी कड़ाअी।

जब अुनके आपरेशनकी बात तय हुअी तो अुन्होंने कहा, 'मुझे तो सामान्य वार्डमें रहना है।' साथियोंके आग्रहसे अलग छोटे कमरेमें रहना मान लिया, लेकिन अुस समय वहां कमरा खाली न होनेसे अुन्हें १० रु० रोजके किरायेके बड़े कमरेमें रखा गया जिसमें सब प्रकारकी सुविधा थी। लेकिन वह कमरा अुनको रुचता न था। जब छोटा कमरा खाली हुआ तो साथियोंने बड़े ही में रहनेकी विनती की। वे बोले, 'अरे मुझे अितने आरामकी जगहमें क्यों रखते हो?' कहते अुनकी वाणी रुक गअी और हिचकी बांध कर रोने लगे। अुनकी अिस भावनाको देख कर हमारे मुंह बंद हो गये और अुनको तुरन्त छोटे कमरेमें ले आये। अुनको बड़ी प्रसन्नता हुअी। यह था अुनका गरीबीसे जीनेका महामंत्र। काकाजीने कभी अपने पास घड़ी या फाअुन्टेन पेन तक नहीं रखी, जो आजके जीवनकी बहुत ही जरूरी चीजें बन गअी हैं। गाड़ीमें जाना होता तो टाअिमके १०–१५ मिनट पहले ही वहां पहुंच जाते। अिसलिअे अुनकी गाड़ी छूट जानेका तो प्रश्न ही नहीं था।

पूज्य काकाजीके जीवनसे हम जितना भी पाठ लें अुतना ही थोड़ा होगा। अैसे अनोखे पुरुष भाग्यसे ही कभी आते हैं और–

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥

पाठ देकर चले जाते हैं। पीछे रहनेवाले अुनके आदर्शोंसे जितना लाभ अुठा सकें अुठायें। ठीक अिसी प्रकार पू० काकाजी अपना काम पूरा करके 'दास कबीरा जतन सों ओढ़ी ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया' रख कर चले गये।

मुझे अुनकी पवित्र आत्माकी शांतिके लिअे प्रार्थना करनेका तो क्या अधिकार है? क्योंकि अुनकी आत्मा तो शांत तथा प्रभुमय ही थी। अुसे अपनी नम्र श्रद्धांजली अर्पित करते हुअे अितना ही कह सकता हूं:

वायुर्यमोग्निर्वरुणः शशांकः, प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः, पुनश्च भूयोपि नमो नमस्ते॥
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते, नमोऽस्तु ते सर्वत अेव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं, सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः॥

भगवान् हम सबको अुनके वियोगको सहन करने और अुनके छोड़े हुअे अधूरे कामको पूरा करनेका बल दे, यही प्रार्थना है।

२३-१०-'५५ बलवन्तसिंह

बंदरोंके प्रति क्रूरता

बम्बअीसे अेक मित्रने 'नफेन' द्वारा प्रसारित निम्नलिखित समाचारकी कतरन भेजी है:

लन्दन, १७ अक्तूबर

चीरफाड़-विरोधी सारी समितियां अिस सप्ताह, लन्दनके केक्सटन हालमें अेक सामुदायिक संमेलनमें अिकट्ठी हो रही हैं। अुनका अुद्देश्य चीरफाड़-संबंधी प्रयोगोंके लिअे दूसरे देशोंसे विविध पशुओंके, खास करके भारतसे बन्दरोंके भेजे जानेका विरोध करनेका है।

चीरफाड़-विरोधी राष्ट्रीय मंडलके मंत्रीने 'नफेन' के प्रतिनिधिको बतलाया कि "यद्यपि हम लोग अिस विषयमें कुछ कर सकनेमें असमर्थ हैं, लेकिन हम भारत-सरकारको, बंदरोंके साथ अिन प्रयोगोंमें कैसा निर्दय व्यवहार किया जाता है, अिस संबंधकी सारी जानकारी लगातार देते रहते हैं।"

डॉ० डब्ल्यु० लेन-पेटर, जो कि 'रिसर्च डिफेन्स सोसायटी' के मंत्री हैं — यह संस्था संशोधन-कार्योंके लिअे बंदरोंके अुपयोगको सर्वथा अुचित मानती है और अुसका समर्थन करती है — आजकल संशोधनके हितमें बंदरोंका निर्यात बढ़वानेके अुद्देश्यसे विदेशोंमें घूम रहे हैं।

अिस संबंधमें 'नफेन' के प्रतिनिधिने पशुओंके प्रति होनेवाली क्रूरताको रोकनेवाली 'रॉयल सोसायटी' के मंत्रीसे भी भेंट की। अुन्होंने बताया कि भारतसे होनेवाले बंदरोंके निर्यातके सवालके संबंधमें अुनकी सोसायटीकी ओरसे अेक शिष्ट-मंडल अभी कुछ दिन पहले भारतके लन्दन-स्थित हाअी कमिश्नरसे मिला था और कहा कि "यद्यपि बन्दरोंका निर्यात बन्द करवानेके अपने प्रमुख अुद्देश्यमें हम लोग सफल नहीं हुअे लेकिन बन्दर जिस तरह भेजे जाते हैं, अुसके तरीकेमें सुधार करवानेमें सफल हुअे हैं।"

भारतने अिस सारे सवाल पर विचार करने और अुपयुक्त कानूनका निर्माण करनेकी दृष्टिसे अेक विशेष समिति भी नियुक्त की है। अिस समितिके अध्यक्ष श्री व्ही० के० कृष्ण मेनन हैं। वे बहुत बुद्धिमान व्यक्ति हैं और हम आशा करते हैं कि अुनकी अध्यक्षतामें यह समिति अिस संबंधमें बहुत कुछ सुधार करेगी।

अिस समाचार पर अपना मत प्रगट करते हुअे अुपर्युक्त मित्र बहुत ठीक कहते हैं कि विदेशी मुद्राकी प्राप्तिके लिअे बन्दरोंका अिस तरह बेचा जाना निरी क्रूरता है। हम लोगोंके लिअे, जो गर्वपूर्वक घोषित करते हैं कि हम बुद्ध और गांधीकी भूमिकी सन्तान हैं, यह बात बहुत अनुचित है। क्या हम आशा करें कि हमारी सरकार भगवान्‌की सृष्टिके अिन मूक प्राणियोंके प्रति होनेवाली अिस क्रूरताको बंद करेगी?

२०–१०–'५५ मगनभाअी देसाअी

(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

समाजके तीन वर्ग और सर्वोदय

[ता० १२-७-'५५ को मेखिया पड़ाव (कोरापुट, अुत्कल) पर दिये गये प्रार्थना-प्रवचनसे।]

हम सब अेक ही पिताके पुत्र हैं, चाहे हमारे धर्म, भाषा, जाति आदि भिन्न-भिन्न हों। अिसलिअे हमारा भाअी-भाअीका नाता बन जाता है। परन्तु आज हम भगवानको भूल गये हैं। अिसीलिअे हमारा समाज अेक-रस नहीं बनता है और हम सुखी नहीं होते हैं। आजके समाजकी हालत अैसी है कि समाजके तीन टुकड़े हो गये हैं। कुछ लोग अूपरवाले कहलाते हैं, कुछ मझले और कुछ नीचेवाले कहलाते हैं। जो अूपरवाले हैं अुनके मनमें नीचेवालोंके लिअे तिरस्कार होता है। मैं मानता हूं कि अुनमें भी कुछ अपवाद जरूर होते हैं। परन्तु अक्सर अूपरवालोंके मनमें नीचेवालोंके लिअे प्रेम-भाव नहीं होता है, यद्यपि अुनका प्रतिदिन सम्बन्ध आता है। वे समझते हैं कि नीचेवाले लोग मूर्ख हैं, अुनमें काम करनेकी बुद्धि नहीं है, वे आलसी हैं, काममें चोरी करते हैं और अगर हम अुन पर नजर न रखें तो वे काम नहीं करते हैं। वे बैलके जैसे हैं। अिसलिअे हम अुन्हें ज्यादा पैसा देंगे तो भी अुनके पास अुसका ठीक अुपयोग करनेकी अक्ल नहीं है। वे हमको ठगते हैं, अुनमें कोअी सत्य नहीं दीख पड़ता।

अब नीचेवालोंकी अूपरवालोंके विषयमें यह राय है कि अूपरवाले सारे बदमाश और बदनियत हैं। ये लोग अुनके खेतोंमें और दूकानोंमें काम करते हैं, और मुंह पर अुनकी तारीफ भी कर लेते हैं, लेकिन फिर भी अुनके मनमें अूपरवालोंके प्रति द्वेष रहता है। अिसलिअे वे अुनकी निन्दा करते हैं। वे अूपरवालोंसे मदद मांगते हैं। मदद न मिली तो जरूर गालियां देते हैं, और मदद मिली तो भी यह कहते हैं कि अिसने आज तो दे दिया, लेकिन कल सवाया वसूल करेगा और क्या-क्या तकलीफ देगा पता नहीं। दोनोंका अेक-दूसरेके बिना चलता नहीं, फिर भी अेकके मनमें तिरस्कार और दूसरेके मनमें द्वेष होता है।

जो मझले होते हैं अुनमें दौड़ चलती है। अुनके पास बहुत ज्यादा पैसा भी नहीं होता है और श्रम-शक्ति भी नहीं होती है। अूपरवालोंके पास पैसा होता है। और नीचेवालोंके पास श्रम-शक्ति होती है। अिसलिअे ये मझले लोग अूपरवालोंके साथ मुकाबला करनेके लिअे नीचेवालोंके साथ मिल जाते हैं और नीचेवालोंको लूटनेके लिअे अूपरवालोंके साथ अेक हो जाते हैं। बड़े लोगोंसे जमीन लेनेकी बात हो तो वे स्वीकार करेंगे, लेकिन छोटे लोगोंको देनेकी बात हो तो वे कहते हैं कि अिससे जमीनके छोटे-छोटे टुकड़े हो जायंगे। मझले वर्गमें आपस-आपसमें स्पर्धा चलती है। अेक क्लर्क दूसरे क्लर्कके साथ स्पर्धा करता है। अिस तरह वे कभी अिस पक्षमें तो कभी अुस पक्षमें दाखिल होकर अपना स्थान कायम रखनेकी कोशिश करते हैं।

अिस तरह अूपरवालोंमें मुख्य भावना तिरस्कारकी होती है, मझले लोगोंमें स्पर्धाकी होती है और नीचेवालोंमें द्वेषकी होती है। अिस तरह समाजके आज तीन टुकड़े हो गये हैं। हम चाहते हैं कि ये तीनों अेक हो जायं और जैसे तिपाअीके तीन पांव होते हैं, अुसी तरह हमारा समाज अुन तीन पांवों पर खड़ा हो। तीनों अेक-दूसरेसे सहयोग करेंगे तो समाज मजबूत बनेगा। भूदान-यज्ञके जरिये हम यही कोशिश कर रहे हैं। हम किसीको समझाते हैं कि आपके पास श्रम-शक्ति है तो आप देशके वास्ते श्रम-दान दीजिये। किसीको समझाते हैं कि आपके पास सम्पत्ति है तो सम्पत्ति-दान दीजिये। भूमिवालोंसे हम कहते हैं कि भूमिकी मालकियत मिटा दीजिये और भूमि सबकी बना दीजिये।

हिन्दुस्तानमें यद्यपि समाजके तीन टुकड़े हो गये हैं फिर भी तीनोंमें अेक श्रद्धा है। हृदयके अन्दर साधु-संतों पर और धर्म पर यह जो श्रद्धा है अुसका परिणाम यह होता है कि हमारी भाषा लोग समझते हैं और वह बात अुन्हें जंचती है। हम बार-बार समझाते हैं तो यह हमारा सत्याग्रह ही चल रहा है। जब तक लोग पूरी तरह नहीं समझेंगे, तब तक हम समझाते रहेंगे। जैसे शिक्षक विद्यार्थीको तब तक समझाता रहता है जब तक वह नहीं समझता है। अुसी तरह हम मानते हैं कि हमारा यह धर्म है कि लोगोंको सतत समझाया जाय। बार-बार समझानेसे आखिर अेक दिन वे समझ ही जायंगे। जो सत्य विचार होता है और प्रेमसे समझाया जाता है वह सबकी समझमें आता ही है। हमारे विचारमें जो सत्य और प्रेम है, वह लोगोंको छूता है, लोग अुसे टाल नहीं सकते और अिसका परिणाम यह हो रहा है कि हमारा समाज अब सुधर रहा है।

अेक जमाना था जब कि खून होते थे, कत्ल होता था। जमीनके अेक टुकड़ेके लिअे यह सारा चलता था। आजकल अैसा नहीं होता है। कहीं अेक आध घटना हो जाती है। अिस तरह समाजकी भावना बदल रही है। अिसीलिअे लोग जमीन दे रहे हैं। नहीं तो बाबाके पास क्या शक्ति है? बाबाके पास कुछ भी शक्ति नहीं है, केवल सत्य और प्रेमकी ताकत है। आपके अिस जिलेमें हमारी बात पर लोगोंने करीब २०० पूरे गांव दिये हैं। और कअी गांवोंने छठा हिस्सा जमीन दी है। वैसे छठे हिस्सेमें और समग्र ग्रामदानमें कोअी खास फरक नहीं पड़ता है। समग्र ग्रामदानमें बड़े लोगोंको अधिक त्याग करना पड़ता है लेकिन अुसका लाभ भी ज्यादा होता है। जब गांवका अेक परिवार बनता है तो गांवकी ताकत बढ़ती है। छठा हिस्सा दान मिलता है तो गांवके सब भूमि-हीनोंको जमीन मिल जाती है, फिर भी किसीके पास ज्यादा जमीन रह जाती है तो किसीके पास कम। समग्र ग्रामदानमें जमीनकी मालकियत ही मिट जाती है।

जहां पर समग्र ग्रामदान मिला है, वहां पर बड़े लोगोंके मनमें तिरस्कारकी भावना नहीं रहेगी, छोटे लोगोंके मनमें द्वेषकी भावना नहीं रहेगी और मझले लोगोंमें स्पर्धाकी भावना नहीं रहेगी, क्योंकि वहां पर न कोअी बड़ा रहेगा न कोअी छोटा रहेगा और न कोअी मझला। सब समान हो जायंगे, थोड़ा-बहुत फर्क रह जायगा, लेकिन वह फर्क हाथकी पांच अंगुलियोंके जैसा होगा। अंगुलियोंमें बहुत ज्यादा फर्क नहीं होता है। पांचों अंगुलियां सहयोग करती हैं, अिसलिअे वे पांच होने पर भी लाखों काम करती हैं। हम चाहते हैं कि समाजमें पांचों अंगुलियों जैसी समानता और परस्पर सहयोग हो। समाजमें सब लोग पांच पांडवोंके जैसे मिल-जुलकर रहें, पंच-महाभूतोंके जैसे मिल-जुलकर रहें। जब यह होगा तो तिरस्कार, द्वेष और स्पर्धारहित समाज बनेगा। हम चाहते हैं कि अैसा समाज बने कि अुसमें प्रेमभाव, आदर और सहयोग हो। अिसीको हम सर्वोदय समाज कहते हैं।

विनोबा

विषय-सूची		पृष्ठ
भारतकी भाषायें और बोलियां — २	बी० जी० खेर	२८१
आन्ध्रमें विनोबा — १	कु० दे०	२८३
विज्ञानकी परिभाषा	मगनभाई देसाई	२८४
अनोखा सत्पुरुष चल बसा	बलवन्तसिंह	२८६
बन्दरोंके प्रति क्रूरता	मगनभाई देसाई	२८७
समाजके तीन वर्ग और सर्वोदय	विनोबा	२८८

www.vinoba.in